



THE UNIVERSITY OF FIJI
SCHOOL OF HUMANITIES & ARTS
DEPARTMENT OF LANGUAGE, LITERATURE & COMMUNICATION

HIC 221: Cultural Values in Literature I:
Oral Literature

Semester 2 2010

Duration of Test: 3 hours
Reading Time: 10 minutes
Marks: 100

Name: _____
I.D Number: _____

निर्देश

क. जो भी प्रश्न पूछे जा रहें हैं उन्हें ध्यान से पढ़िए और उनका सही-सही उत्तर देने का प्रयास कीजिए ।

ख. इस परीक्षा पत्र में तीन भाग हैं । सभी प्रश्न अनिवार्य है ।

भाग एक: कविता
अंक: 40

प्रश्न 1
अंक: 20

निम्नलिखित सात उद्धरणों में से पाँच की संदर्भ सहित व्याख्या प्रस्तुत कीजिए ।

क. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नहि ।
सब अंधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि ॥

ख. ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोइ ।
अपना तन मन सीतल करै, औरन कौ सुख होइ ॥

ग. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदनविष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ॥

घ. जात पवनसुत देवन देखा, जानै कहँ बल बुद्धि विसेखा ।
सुरसा नाम अहिनकी माता, पठयहु आइ कही तेहि बाता ॥

ड. हेरी म्हा दरद दिवाणी
म्हारा दरद न जाण्यौ कोय
घायल री गत घायल जाण्यौ
हिबड़ो अगण सन्जोय
जौहर की गत जौहरी जाणै
क्या जाण्यौ जण खोय
मीराँ री प्रभु पीर मिटाँया
जब वैद साँवरो होय

च. मैया कबहिं बढैगी चोटी।
किती बार मोहे दूध पिवत भ यह अजहूँ है छोटी॥
तू तो कहति बल की बैनी ज्यों है है लांबी मोटी।
काढत गुहत न्हावत ओछत नागिनि-सी भूईं लोटी॥
काचो दूध पिवावति पचि-पचि देति न माखन रोटी।
सूर स्याम चिरजीवौ दो भैया हरि-हलधर की जोटी॥

छ. पाया मैंने बचपन फिर से
बचपन बेटी बन आया
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर
मुझमें नवजीवन आया ।

प्रश्न 2

अंक: 10

नीचे दी गई चार कविताओं में से किन्हीं दो की व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए ।

क.

मित्रता की छाँव

नहीं फोड़ो, दोस्तो !
ज़िन्दगी के इस रंगमहल को
हम टूटकर नहीं
जुड़े रहकर ही
अपना जीवन जीना चाहते हैं ।

नहीं तोड़ो
पेड़ों की कच्ची फसल को
हम रूठकर नहीं
मुस्कराकर
मित्रता की छाँव में रहना चाहते हैं ।

नहीं फोड़ो
आपसी स्नेह के साँझे आँचल को
हमने कड़ी धूप में
इस आँचल को ओढ़कर
वर्षों से इकट्ठे जीना सीखा है ।

नहीं उजाड़ो
आने वाले हसीन कल को
हमने सपनों के झरोखों से
इसमें झाँककर
इसका हर रंग देखा है ।

ख.

माँ को भेंट

ऐ-माँ जन्म-दिन पर तेरे

दूँ मैं तुझे क्या उपहार

एक छोटा सा दिल है मेरा

जिसमें हैं दुआएँ हजार

तेरा प्यार अनमोल है

तेरी ममता नहीं बेकार

तेरी उम्र लम्बी हो माँ

पहनों मेरे भी जीवन के हार

जैसे हुआ दिया तू ने

अपना सारा प्यार-दुलार

हो के दूर तुझ से आज

है मन मेरा अति बेजार

है सभी सुख-साधन मुझे

फिर भी सूना मन-संसार

प्रार्थना है ऊपर वाले से

दे तुझे फूल मुझे खार

ग.

नदी और पर्वत

नदी नीर ले बहती जाती

पर्वत से यह कहती जाती -

"तू ऊँचा पथरीली छाती

ना कोई रंग उमंग है भरती

खंडहर तभी तेरी है धरती

दया जो तेरे मन में रहती

ना मैं शोर यूँ कर के बहती

हम तुम दोनों मिल कर रहते

फल-फूलों से खिल कर रहते",

यह सुन पर्वत नदी से बोला -

"रक्षा का हूँ पहने चोला

लम्बी चौड़ी छाती मेरी

सहिष्णुता से भरी घनेरी

स्वार्थ में गर डूब गये हम

टूट जाएगा यूँ ही ये दम

जन्म अगर मेरा ना होता

सारा जग बिन वर्षा रोता

प्यासी तू और धरती मरती

बिना अनाज क्या दुनिया करती

परोपकारी बनना है तो

ईर्ष्या और खुदी को तज दो।"

मैंने मौत अपनी देखी

कल रात मैंने अपनी जिन्दगी को मिटते देखा,
मौत के हाथों अपनी देह को मैंने लुटते देखा।
मैंने देखा कि मेरी देह पड़ी है,
मेरी आत्मा मुझ से कहीं दूर खड़ी है।

मैंने देखा मेरी देह खामोश है,
मुझ में न बोल है न होश है।
मैंने देखा मेरा दिल थमा है,
और मेरा लहू भी जमा है।

मैंने देखा मेरी आत्मा भटक रही है,
जमी और आसमां के दरमियां लटक रही है।
लगता था जैसे वो जा रही है देह को छोड़ कर,
जैसे जन्मों का रिश्ता कोई एक पल में तोड़ कर।

पहली बार मैंने लोगों को अपने इतना करीब देखा,
पहली बार मैंने अपने को इतना खुशनसीब देखा।
कोई चूम रहा था गाल मेरा,
तो कोई छू रहा था बाल मेरा।

मैंने देखा कोई आंसू बहाता था,
तो कोई खामोश देह को गले लगाता था।
मैंने चारों तरफ से प्यार की बरसात देखी,
क्या मौत थी मेरी जो मैंने कल रात देखी।

जो अपने थे मेरी मौत पर बेहद आंसू बहाये,
हद से ज्यादा तो वो बहाये जो कभी हमें समझे थे पराये।
सब के चेहरे पर गम ही गम था,
क्या बतायें कि किसके चेहरे पर क्या कम था।

देखा, जब मेरा लिबास उतार मुझे कफन पहनाये,
तब अपने आप मेरी आंखों से दो आंसू निकल आये।
मैंने मरे हुआँ को लाखों देखा।
लेकिन कल पहली बार अपनी मौत अपने आंखों देखा।

गीता पाठ के बाद लोग अर्थी उठा कर चले,
लगता था जैसे लोग डोली में दुल्हन को बिठा कर चले।
मेरी जिन्दगी का अन्तिम सफर था मैंने भी साथ दिया,
अपने अर्थी के कोने पर खुद मैंने भी हाथ दिया।

शमशान में जब अपने कांधे से उतारा खुद अपनी लाश को,
तो एक बार फिर भर आई आंख मेरी देख अपने लिबास को।
चलता फिरता बदन मेरा खामोश सोया था,
सब देख उस रात मैं बेहद रोया था।

सजा कर चिता पल में उस पर मुझे लिटा दिये,
लगा कर आग मेरी हस्ती को पल में मिटा दिये -
पल भर आग जली और मेरी देह राख में मिली,
मैं देखता रहा, "अनजान" कैसे मेरी देह खाक में मिली।

भाग दो: भारतीय संगीत तथा लोक साहित्य

अंक: 40

प्रश्न 1

अंक : 10

भारतीय संगीत तथा आजकल का फिल्मी संगीत पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत कीजिए ।

प्रश्न 2

अंक: 10

लोक साहित्य तथा फीजी के लोक गीतों पर आप अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।

प्रश्न 3

अंक: 10

“प्रशान्त की लहरें” की तीन कहानियों “नाग देवता”, “हरा तालाब”, “मैना उड़ी फुर्र” में से किसी एक कहानी से आपको भारतीय और फीजियन संस्कृति में समन्वय की भावना किस प्रकार दिख रही है, इसकी समीक्षा प्रस्तुत कीजिए ।

प्रश्न 4

अंक: 10

नीचे दिए गए चार लोक गीतों में से किन्हीं दो की व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए ।

क.

हमारी दुलारी हो बेटी आँखी की रे पुतरिया ।

छोड़ के चली हो बेटी बाबा की रे नगरिया ।

१. रोवत ठाढ़ी हो अम्मा नीर झरे हो आँखियाँ,
सूनी होइ गइ हो बेटी अम्मा की रे दुवरिया ।

२. रोवत ठाढ़े हो बाबा नीर झरे हो आँखियाँ,
छोड़ के चली हो बेटी बाबा की रे डेहरिया ।

३. रोवत ठाढ़े हो भइया नीर झरे हो आँखियाँ,
ऊँची तुम राखेव हो बहिनी भइया की रे पगड़िया ।

ख.

(भक्तवान के गीत)

१४. सुमिरण

हम तुम्हें पूजन आई हो जागो धरती मइया ।

१. पहला पुजन मइया अचमन करिबे,
दुसरे में सगरा खनाय देइबे, जागो धरती मइया ।

२. तीसरी बिनअति मइया सेंदुरा चढ़इबे,
चौथे में दियना जराय देइबे, जागो धरती मइया ।

३. पंचई बिनअति मइया माटी उठइबे,
देवी देवता मनाय लेइबे, जागो धरती मइया ।

(सगरा = सगर, ताताब, पोतरा बावली । खनाय = खोदाय, खोदवाय ।

बिनअति = विनती)

ग.

रचनाकार: ठा. गंगाभक्त सिंह भक्त

बादरु गरजइ बिजुरी चमकइ
बैरिनि ब्यारि चलइ पुरबइया,
काहू सौतिन नई भरमाये
ननदो फेरि तुम्हारे भइया॥

दादुर मोर पपीहा बोलइ
भेदु हमारे जिय को खोलइ
बरसा नाहिं, हमारे आँसुन
सइ उफनाने ताल-तलइया।
काहू सौतिन...॥

सबके छानी-छप्पर द्वारे
छाय रहे उनके घरवारे,
बिन साजन को छाजन छावइ
कौन हमारी धरइ मइइया ।
काहू सौतिन...॥

सावन सूखि मई सब काया
देखु भक्त कलियुग की माया,
घर की खीर, खुर-खुरी लागइ
बाहर की भावइ गुड़-लइया।
काहू सौतिन...॥

देखि-देखि के नैन हमारे
भँवरा आवइ सँझ-सकारे,
लछिमन रेखा खिची अवधि की

घ.

आज बिरज में होरी रे रसिया / ब्रजभाषा

रचनाकार: अज्ञात

आज बिरज में होली रे रसिया

होरी है रे रसिया, बरजोरी है रे रसिया | आज बिरज में ...

इत तन श्याम सखा संग निकसे

उत वृषभान दुतारी है रे रसिया | आज बिरज में ...

व्रत गुलाल लाल भये बादर

केसर की पिचकारी है रे रसिया | आज बिरज में ...

बाजत बीन, मृदंग, झांझ, डफली

गावत दे - दे - तारी रे रसिया | आज बिरज में ...

श्यामा श्याम मिल होली खेलें,

तन मन धन बलिहारी रे रसिया,

आज बिरज में होली रे रसिया !

प्रश्न 1

अंक : 20

नीचे दिए गए दस मन्त्रों में से किन्हीं पाँच की व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए ।

क.

यो जागार तमृचः कामयन्ते
यो जागार तमु सामानि यन्ति ।
यो जागार तमयं सोम आह,
तवाहमस्मि सख्ये न्योकः ॥

ख.

यो भूतं च भव्यं च, सर्वं यश्चाधितिष्ठति ।
स्वर्गस्य च केवलं, तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥

ग.

वृते वृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा,
सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे,
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

घ.

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताऽध्वता जानता संगमेमहि ॥

ङ

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति
दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।

च. तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात् शुक्रमुच्चरत्,
पश्येम शरदः शतं; जीवेम शरदः शतं;
शृणुयाम शरदः शतं; प्रब्रवाम शरदः शतं;
अदीनाः स्याम शरदः शतं; भूयश्च शरदः शतात् ।।

छ. उद्यानं ते पुरुष नावयानं,
जीवांतु ते दक्षतातिं कृणोमि ।
आहि रोहेममृतं सुखं रथं,
अथजिर्विर्वदथमावदासि ।।

ज. नहि मे अक्षिपच्च,
नाच्छान्त्युः पंचकृष्टयः ।
कुवित्सोमस्यापामिति ।।

झ. नमः शंभवाय च मयोभुवाय च,
नमः शंकराय च मयस्कराय च,
नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

ण. परोऽपेहि मनस्याप
किमशस्तानि शंससि
परेहि न त्वा कामये
वृक्षां वनानि संचर,
गृहेषु गोषु मे मनः ।

समाप्त

